RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

छत्तीसगढ़ में ई–पुस्तकालय की भविष्य में प्रासंगिकता पर : एक अध्ययन

[1]धनकुमार महिलाँग; [2]डॉ. संगीता सिंह

[1]शोधार्थी एम.फिल. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, करगी रोड कोटा, बिलासपुर (छ0ग0)
[2]शोध निर्देशिका विभागाध्यक्ष / ग्रंथपाल विभाग–पुस्तकालय एवं सचूना विज्ञान डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ0ग0)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

Keywords
ई–पुस्तकालय, ग्रंथपाल, विद्यार्थी–शोधार्थी छत्तीसगढ़।

ABSTRACT

प्रस्तुत लेख छत्तीसगढ में ई–पुस्तकालय की भविष्य मे प्रासंगिकता को दर्शाता है। अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ के 5 विश्वविद्यालयों के ग्रंथपाल, 20 महाविद्यालय के ग्रंथपाल, 20 सूचना प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ, 10 विषय विशेषज्ञ प्राध्यापक, 10 शोधार्थी, तथा 20 विद्यार्थियों सहित कुल 100 व्यक्तियों से प्रश्नावली के माध्यम से रेंडम सेम्पलिंग तकनीक के द्वारा डेटा संकलन किया गया है। जिसमें ई–पुस्तकालय की भविष्य में प्रासंगिकता क्या होगी और कहां तक पहुंचाया जा सकता है को ज्ञात किया जाएगा।

प्रस्तावना

ई–पुस्तकालय का शाब्दिक अर्थ होता है कि पाठ्य सामाग्री या पुस्तकें डिजिटल रूप में होती हैं अर्थात ई–पुस्तकें कागज के बजाय डिजिटल संचिका के रूप में प्राप्त की जाती है। जिन्हें हम आज के वर्तमान समय में कम्प्यूटर एवं मोबाईल या अन्य यंत्रों की सहायता लेकर पढ़ा जा सकता है। इसके अलावा इन्हें इन्टरनेट पर भी पढ़ा जा सकता हैं। ये पुस्तकें विभिन्न प्रकार के फाईल फॉर्मेट में होती है। जो PDF , XPS आदि को सम्मिलित किया गया है। इनमें से PDF Format अधिक प्रचलित है। बहुत ही जल्द पाम्परिक पुस्तकें और पुस्तकालयों के स्थान पर सुप्रसिद्ध उपन्यासों और पुस्तकों के नये रुपों में जैसे ऑडियो पुस्तके, मोबाईल, टेलीफोन पुस्तके, ई–पुस्तकें इत्यादि उपलब्ध होगी।

आज के वर्तमान समय में ई–पुस्तकालय आम हो चुका है। प्रत्येक व्यक्ति ई–पुस्तकालय की सेवाएं प्राप्त करना चाहता है। हमारे छत्तीसगढ में भी ई–पुस्तकालय प्रचलित होते जा रहे है, जो आने वाले भविष्य में एक उभरता हुआ ई–पुस्तकालयों की प्रासंगिता का प्रभाव देखने को मिलेगा। चाहे विद्यालयीन पुस्तकालय हो, महाविद्यालयीन हो या फिर विश्वविद्यालीयन पुस्तकालय हो भविष्य में यह ई–विश्वविद्यालय पुस्तकालय के नाम से जाने जाएंगे। पुस्तकालयों की सेवाओं से आप इस तरह परिचित होंगे कि ई–पुस्तकालय सभी प्रकार के पुस्तकालायों मे अपना प्रभाव डालेंगे। छत्तीसगढ़ में ई–पुस्तकालय अभी बहुत ही कम प्रभाव मे है। जो वर्तमान समय में यहा ई–पुस्तकालय नही है।

इसी संदर्भ में वेब दुनिया के आफिसियल वेबासाईट की एक समाचार का उदाहरण देखतें है–

ज्ञान के खजाने राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय को आज राष्ट्र के नाम समर्पित कर दिया गया और अब देश का हर नागरिक इन्टरनेट या मोबाइल फोन पर मुफ्त में पुस्तकें एवं शोध ग्रन्थ तथा पत्रिकाएं पढ़ सकता है। इस पुस्तकालय में एक करोड़ सत्तर लाख डिजिटल पाठ्य सामग्री हैं और ऑडियो पुस्तकों के अलावा वीडियो लेक्चर भी हैं।भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) खड़गपुर द्वारा तैयार इस डिजिटल पुस्तकालय में 200 भाषाओं में यह पाठ्य सामग्री है जिसे सिंगल विंडो पर चौबीसों घंटे पढ़ा जा सकता है। मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावडेकर ने आज यहाँ विज्ञानं भवन में इस डिजिटल पुस्तक को राष्ट्र के नाम समर्पित किया।

जावड़ेकर ने कहा कि पहले ज्ञान के लिए गुरु होते थे। अब बिना गुरु के ज्ञान ग्रन्थ द्वारा प्राप्त कर सकते हैं यानी गुरु ही ग्रन्थ है और यह ग्रन्थ आपके दरवाजे पर है, पिछले एक साल से शुरू यह डिजिटल पुस्तकालय अब तक केवल शिक्षकों और छात्रों के लिए खुला था लेकिन आज से यह हर किसी के लिए नि: शुल्क खुल गया है यानी ज्ञान का खजाना अब आपके सामने खोल दिया गया है और यह पुस्तकालय आपके मोबाइल में आपकी जेब में है। यह पुस्तालय हमेशा मुफ्त रहेगा और यह जनता का अधिकार है जो हमेशा रहेगा,आप कहीं भी कभी भी दुनिया की किसी किताब को पढ़ सकते हैं।

उन्होंने कहा कि अभी 35 लाख लोग इसका इस्तेमाल कर रहे हैं और एक साल में इसके सदस्यों की संख्या बढ़ाकर साढ़े तीन करोड़ करने का इरादा है। उन्होंने कहा कि पहले किताबों के लिए एक दूसरे कालेज के पुस्तकालयों या शहरों में भटकना होता था पर इस पुस्तकालय से वह समस्या दूर हो गयी है। इसमें किताबों, शोध ग्रंथों और

RRIJM 2015, All Rights Reserved

पत्रिकाओं के अलावा प्रतियोगितायों के प्रश्नपत्र भी है। उन्होंने बताया कि यह पुस्तालय मोबाइल एप्प में भी है और अभी यह एप्प तीन भाषाओं में हैं। उन्होंने प्राचीन भारत में नालंदा विश्वविद्यालय की विशाल लाइब्रेरी को आक्रमण कारियों द्वारा जलाये एवं नष्ट किये जाने की घटना का जिक्र करते हुए कहा कि डिजिटल पुस्तालय नष्ट नहीं किया जा सकता है यहाँ तक कि बम हमले से भी इसे नुकसान नहीं पहुँचाया जायेगा,इस तरह ज्ञान हमेशा सुरक्षित रहेगा।

केन्द्रीय संस्कृति मंत्री डॉ महेश शर्मा ने अपना अनुभव सुनाते हुए कहा कि जब वह चिकित्सा की पढ़ाई पढ़ रहे थे तो उनके 35 साल पहले उनके पिता की मासिक आय 160 रुपए थी और तब डाक्टरी की किताब 600 रुपये में मिलती थी और हमारे पास किताब खरीदने के पैसे नहीं होते थे लेकिन तब डिजिटल पुस्तकालय नहीं होते थे।

आज यह समस्या नहीं है, अब किताबें उपलब्ध हैं। उन्होंने कहा कि डिजिटल पुस्तालय से ज्ञान का प्रचार प्रसार होगा इसलिए इस डिजिटल आन्दोलन को आपस में मिलकर आगे बढ़ाने की जरूरत है। उन्होंने इस क्षेत्र में केरल के पी एन पणिक्कर फाउंडेशन के योगदान को रेखांकित किया।उच्च शिक्षा मंत्री डॉ सत्यपाल सिंह ने कहा कि शिक्षा, ज्ञान और विद्या में फर्क है।

ज्ञान तो रोशनी के सामान है जिस तरह सूरज की रोशनी को कैद नहीं किया जा सकता,उस तरह ज्ञान को भी कैद नहीं किया जा सकता।आयी आयी टी खड़गपुर के निदेशक डॉ पार्थम चटर्जी ने कहा कि इस पुस्तकालय में दिव्यांगों के लिए भी विशेष व्यवस्था है और इसमें मल्टी मीडिया भी है। इसमें 12 स्कूल बोर्ड की किताबें भी हैं और पांडुलिपियाँ भी है और डाटा बैंक भी है, अन्तराष्ट्रीय डिजिटल कॉपी राइट नीति के बनने से यह पुस्तकालय और समृद्ध होगा।

ई–पुस्तकालय में इलेक्ट्रानिक संसाधन विभिन्न प्रकार के उपलब्ध होते है। जिनका उपयोग पाठक अपनी आवश्यकतानुसार कर सकते है, इनके प्रकार निम्न है :––

ई–बुक **E-Book**
ई–जर्नल **E-Journal**
ई–शोध प्रबंध **E-Research Managment**
ई–अखबार **E-Paper**
ई–मैग्जीन्स **E-Magzines**
ई–डिजिटल ईमेज **E- Digital Image**
ई–डिक्शनरी **E- Dictinory**
ई–ग्लोसरी **E-Glosarry**
ई–मेल **E-Mail**
ई–रिसर्च रिपोर्ट्स **E-Research Reprotras**
ई– लाईब्रेरी कैटेलॉग **E-Library Catalouge**

उद्देश्य

अध्ययन से संबंधित उद्देश्य निम्नलिखित है।

1) ई–पुस्तकालय से परिचित है या नहीं को ज्ञात करना।
2) ई–पुस्तकालय की अघतन की आवश्यकता ज्ञात करना।
3) ई–पुस्तकालय के भावी उपयोग के स्तर में बढ़ोतरी को ज्ञात करना।
4) ई–पुस्तकालय की उपलब्धता को और बढ़ावा चाहिए या नही ज्ञात करना।
5) हानि एवं लाभ की श्रेणी को ज्ञात करना है।

शोध साहित्य की समीक्षा :–

Anandhali, Gavisiddappa and Suresh, Patil 2013 ने 125 शिक्षकों के अध्ययन व्यवहार पर इलेक्ट्रॉनिक मिडिया के प्रभाव का अध्ययन किया है। जिसमें निष्कर्षतः इन्होंने बताया है, कि शिक्षकों के अध्ययन व्यवहार पर इलेक्ट्रॉनिक मिडिया का बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ा है। साथ ही सुझाव दिया है, कि ग्रंथालयों में इलेक्ट्रॉनिक प्रलेखों के प्रबंधन एवं रख–रखाव के लिए कर्मचारियों को आधुनिक ग्रंथालय तकनीक को अपनाना चाहिए।

Egperongbe, Halima Sadia 2012 ने इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के उपयोग का अध्ययन किया है। जिनमें 112 प्राध्यपको एवं 70 शोधार्थियों से प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ो को एकत्रित किया है। तत्पश्चात इन्होने अध्ययन के बाद बताया है कि 71प्र4ः प्राध्यापकगण एवं 78प्र6ः शोधार्थीगण इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के प्रति जागरूक है। इस प्रकार प्राध्यापकगण तथा शोधार्थीगण ई–जरनल का उपयोग करते है।

Babu, V. Nieerkshana and Shivaprasod, G.K. 2011 ने अपना अध्ययन प्रस्तुत किया है कि भारत का प्रत्येक ग्रंथालय निरंतर कम होते बजट, जगह की कमी, तकनीकी परिवर्तन एवं तीव्र गति से जर्नल्स की मूल्य वृद्धि का सामना कर रहा है। इन्होंने यू.जी.सी. इन्फोनेट, इनडेस्ट, सी.एस.आर., ई–जर्नल्स कंसोर्टिया द्वारा स्थापित कंसोर्टिया के लाभ एवं वर्तमान परिपेक्ष्य में ग्रंथालय पर पड़ने वाले प्रभाव पर विस्तार से वर्णन करते हुए कंसोर्टिया को भारत में उच्च शिक्षा एवं शोध को उपयोगी बनाने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिया है।

Rana, Harpreet Kaur, Kumar, Dinesh and Arju 2011 ने अध्ययन किया है। जिसमें प्रत्येक राज्यों में संसाधन सहभागिता हेतु नेटवर्क को स्थापित करना एवं बढ़ावा देना

RRIJM 2015, All Rights Reserved

है। आपने निष्कर्ष में बताया है कि वर्तमान 36 समय में बड़ी संख्या में ग्रंथालय एवं सूचना केंद्रों के द्वारा नेटवर्को को स्वीकार किया जा रहा है। भारत में नवीन युग के दौर में कंप्यूटर, कम्यूनिकेशन नेटवर्को का प्रयोग सामान्य एवं ग्रंथालय सूचना के उद्देदेश्य से किया जा रहा है। भारत में कैलिबनेट, मालिबनेट, डेलनेट, इनफ्लिबनेट आदि केंद्र स्थापित है जो कंसोर्टिया संसाधन, सहभागित एवं ई–जर्नल्स के आदान–प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

Sinha, Manoj Kumar, Gauri, Shingh and Bimal Sinha 2011 ने ग्रंथालय उपयोगकर्ताओं के द्वारा यू.जी.सी. इन्फोनेट डिजिटल ग्रंथायल कान्सोर्सिया में उपलब्ध इलेक्ट्रॅानिक संसाधनों के उपयोग का अध्ययन किया है। जिसमें इन्होनें खोजा है कि कुल 257 उपयोगकर्ताओं में से 45: ई–जर्नल्स 43: ई–बुक 39: ऑन लाइन डाटा बेस 38: सीडी रोम डाटाबेस 35: शोध एवं लघु शोध प्रबंध, 31: अनुक्रमणिकरण एवं सारकरण जर्नल्स तथा 21: ओपेक का उपयोग करते है।

शोध प्रविधि

यह लेख सर्वेक्षण विधि पर आधारित है जिसमें स्वयं प्रश्नावली तैयार कर आंकडो के संकलन के लिए रेंडम सेम्पलिंग तकनीक का उपयोग कर आंकड़ो का संकलन या संग्रह किया गया है। यह अध्ययन प्राथमिक आकड़ो पर आधारित है –

आंकड़ो का विश्लेषण ::–

अध्ययन हेतु आंकड़ो के संकलन के लिए 120 व्यक्तियों के बीच प्रश्नावली का वितरण किया गया था जिसमें से मुझे 100 प्राप्त हुए। जिनका विश्लेषण संख्यिाकी विधि से करते हुए ग्राफ, चार्ट एवं सारणी के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

सारणी 1. ई–पुस्तकालय से परिचित

क्र.	परिचित	संख्या	प्रतिशत
1	हा	75	75
2	नहीं	25	25

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है ई–पुस्तकालय की अवधारणा से 75 प्रतिशत लोग परिचत है तथा 25 प्रतिशत अनभिज्ञ, जो कि इस बात का प्रमाण है कि इस प्रदेश मे ई–पुस्तकालय अपने बाल अवस्था से प्रौढ़ की ओर बढ़ रहा है।

सारणी 2. ई–पुस्तकालय की अघतन की आवश्यकता।

क्र.	आवश्यकता	संख्या	प्रतिशत
1	आवश्यकता है	40	40
2	आवश्यकता नही है	20	20
3	वर्तमान समय के लिए पर्याप्त है	30	30
4	कुछ कह नही सकते	10	10

तालिका –2. इसी प्रकार 40 प्रतिशत लोगों का मानना है कि ई–पुस्तकालय को अघतन करने की आवश्यकता है जबकि 30 प्रतिशत लोगों ने वर्तमान समय के लिए इसे पर्याप्त माना।

सारणी 3. ई–पुस्तकालय के भावी उपयोग के स्तर में बढ़ोतरी।

क्र.	ई–पुस्तकालय के भावी उपयोग के स्तर में बढ़ोतरी	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ आवश्यक है	60	60
2	हो सकता है कोई नवीन व्यवस्था हो	10	10
3	शायद हो	5	5
4	कह नही सकते	25	25

तलिका – 3 में ई–पुस्तकालय के भावी उपयोग मे बढ़ोतरी संबंधित आकड़ो का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि 60 प्रतिशत इसे आवश्यक

RRIJM 2015, All Rights Reserved

मानते है जबकि 10 प्रतिशत लोग नवीन व्यवस्था स्थापित होने को लेकर आशंकित है। वहीं 25 प्रतिशत लोगो ने कुछ न कहने की बात कहीं।

सारणी 4. . ई–पुस्तकालय का प्रचलन घट या बढ़ रहे है

क्र.	**ई–पुस्तकालय के प्रचलन मे मांग बढ़ रही है**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1	हाँ	80	80
2	नही	2	2
3	हो सकता है	5	5
4	कह नही सकते	13	13

ई–पुस्तकालय ने पाठको को काफी प्रभावित किया है जो आकड़ो में प्रदर्शित हो रहा है 80 प्रतिशत पाठक इसके समर्थन में है जगकि केवल 2 प्रतिशत पाठको का मानना है कि इसका प्रचलन घट रहा है।

सारणी 5. ई–पुस्तकालय का विस्तार होना चाहिए या नही

क्र.	**ई–पुस्तकालय की उपलब्धता**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1	हाँ	80	80
2	काफी है	3	3
3	बिल्कुल नही	4	4
4	कह नही सकते	13	13

तलिका –5 ग्राफ को देखने से यह ज्ञात हो रहा है कि 80 प्रतिशत पाठक इसके विस्तार के पक्ष मे है तथा सिर्फ 4 प्रतिशत विस्तार न होने की बात कहते है।

सारणी 6. ई–पुस्तकालय को लाभ की श्रेणी मे रखने पर

क्र.	**लाभ की श्रेणी मे**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1	80 % से अधिक	55	55
2	60 % से अधिक	20	20
3	45 % से अधिक	12	12
4	30 % से अधिक	13	13

तलिका –6को देखने से यह ज्ञात हो रहा है कि 55 प्रतिशत पाठक ई–पुस्तकालय को 80 से अधिक प्रतिशत लाभ की श्रेणी में रखते है वहीं सिर्फ 13 प्रतिशत पाठको का यह मानना है कि इससे केवल 30 प्रतिशत लाभ पहुंचा है।

सारणी 7. ई–पुस्तकालय को हानी की श्रेणी मे रखने पर।

क्र.	**हानि की श्रेणी मे रखने पर**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1	80 % से अधिक	20	20
2	60 % से अधिक	15	15
3	50 % से अधिक	10	10
4	30 % से अधिक	55	55

तलिका –7. को देखने से यह ज्ञात हो रहा है कि केवल 20 प्रतिशत पाठक ई–पुस्तकालय को 80 से अधिक प्रतिशत हानि की श्रेणी में रखते है वहीं 55 प्रतिशत पाठको का यह मानना है कि इससे केवल 30 प्रतिशत हानि पहुंचा है।

लाभ और हानि की अच्छी तरह समझने के लिए नीचे ग्राफ के द्वारा भी दर्शाया गया है —

तालिका 6 का ग्राफ व नीचे तालिका 7 का पाई चार्ट ग्राफ

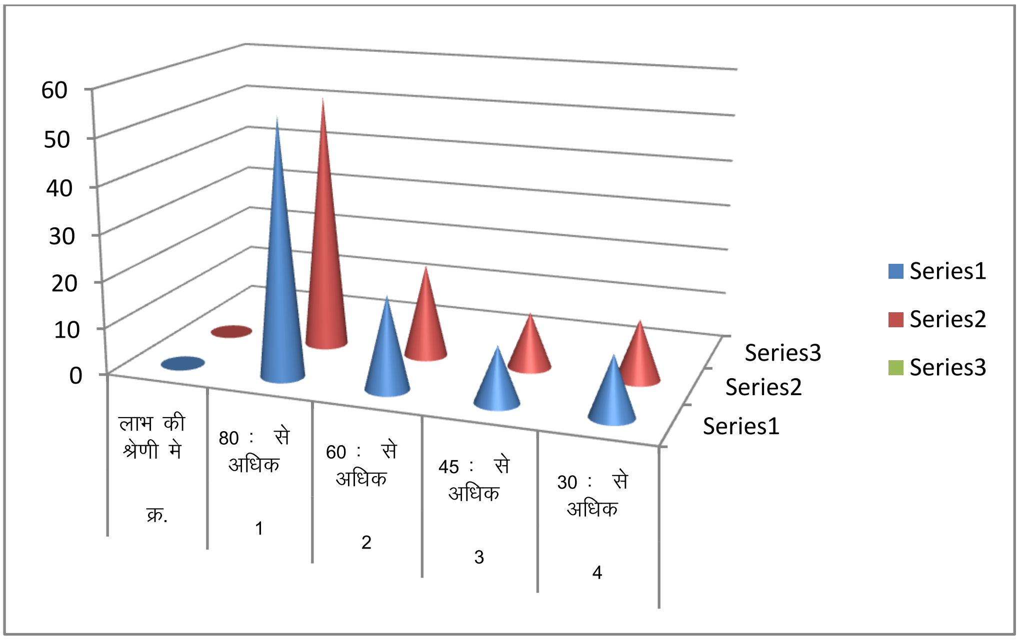

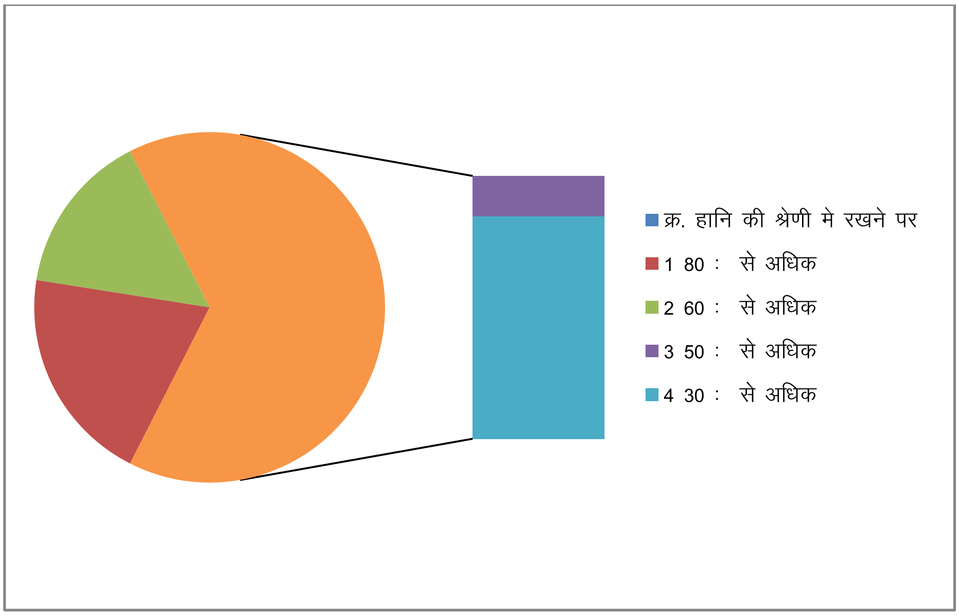

निष्कर्ष Conclusion

अध्ययन से प्राप्त आंकड़ो के आधार पर यह परिणाम आया है कि ई–पुस्तकालय वास्तव मे वर्तमान समय की आवश्यकता है साथ ही इससे अनेक लाभ हो रहे है जिसके परिणाम स्वरूप अधिकांश पाठकों इसे स्वीकार है किया है, किन्तु प्रदेश की इसकी स्थिति में और सुधार करने की आवश्यकता महसुस की गई है जिससे की आने वाले समय में ई–पुस्तकालय जगह–जगह स्थापित किए जाए। पुस्तकालय को डिजिटल लाईब्रेरी का स्वरूप मिलते ही उन्नाव को प्रदेश को किताबों का एक नया संसार मिला है। छात्र–छात्रा ही नही बल्कि सभी जनपदवासी शिक्षा, विधि, विज्ञान आदि से संबंधित पुस्तकीय ज्ञान का लाभ घर बैठे ही हासिल की जा सकती है। कम्प्यूटर में एक क्लिक करने के साथ ही अपने मनपसंद कवि, साहित्यकार व उपन्यासकार द्वारा लिखित कृतियों को पढ़ सकेंगे और रोजगार व नौकरी के लिए भी सरकारी तथा गैरसरकारी सेक्टरों के रिक्त पदो के लिए ऑनलाइन आवेदन की सुविधा भी ई–लाईब्रेरी से मिल सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

RRIJM 2015, All Rights Reserved

- सी. लाल ग्रंथालय एवं आधुनिक प्रौद्योगिकी एस.एस. पब्लिकेशन नई दिल्ली
- https://www.nayaindia.com/hindi-news/national-digital-library-is-now-open-to-every-citizen.html
- https://www.ala.com
- https://epustakalay.com/
- एनसाईक्लोपिडीया ऑफ लाईब्रेरी एंड इनफो. साईन्स
- The Five Laws of Library Science by S.R. Ranganathan
- विकिपीडिया.काम
- Managing Information Technology 7th edi. 2012 by broun
- Metadata and Digital Library Development - Library of Congress, 2008
- https://hi.m.wikipedia.org

RRIJM 2015, All Rights Reserved